ओ३म्

सदाचार शिक्षा

GOOD CONDUCT

लेखक

स्व. सत्यराम आर्य

सम्पादक

हरबंसलाल कोहली

प्रकाशक

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा

6949, शुद्धि सभा भवन, बिरला लाईन्स,

कमला नगर, दिल्ली-110007

दूरभाष : 23847244

प्राप्ति स्थान :
भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा
6949, शुद्धि सभा भवन, बिरला लाईन्स,
कमला नगर, दिल्ली-110007
दूरभाष : 23847244

मूल्य : पढ़ें और बच्चों को पढ़वाएँ

प्रथम संस्करण : दिसम्बर 2007

मुद्रक :
मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करौल बाग,
नई दिल्ली-110005
दूरभाष : 41548504, चलभाष : 9810580474

प्राक्कथन

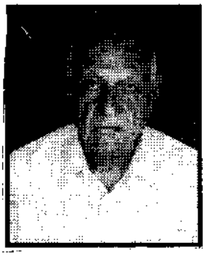

हरबंसलाल कोहली

इस पुस्तक को लिखने वाले स्व. श्री सत्यराम आर्य जी, सुपुत्र श्री हरदयाल भाटिया जी, निवासी ताँसा शरीफ, जिला-डेरा गाजीखां, (पाकिस्तान) वर्तमान पर थे।

श्री सत्यराम आर्य जी का जन्म सन् 1892 में कालाबाग (मियांवाली) में हुआ था। और उनका विशेष कारोबार कालाबाग (मियांवाली) में संघर व्यापार मण्डल के नाम से बहुत प्रसिद्ध था। श्री सत्यराम जी तांसा शरीफ में संस्कृत एंग्लो वैदिक विद्यालय में सन् 1928 से 1937 तक प्रबन्धक रहे। इस क्षेत्र में इस प्रकार का संस्कृत विद्यालय चलाना एक महत्त्वपूर्ण कार्य था। यह पुस्तक डॉ. ओमप्रकाश भाटिया जी (लाजपत नगर, नई दिल्ली) के सहयोग से प्रकाशित की जा रही है।

यह लघु पुस्तिका आर्यसमाज के सिद्धान्तों का एक निचोड़ है और इसमें विद्यार्थियों से लेकर बड़ों तक सबको शिक्षा प्राप्त होती है और आशा की जाती है कि इस पुस्तिका से न केवल आर्यसमाज, बल्कि हिन्दू जाति के सब लोगों को मार्गदर्शन प्राप्त होगा। इसमें यह कहने में कोई संकोच नहीं कि पुस्तिका में लिखे विचार सर्वमान्य और समस्त मानव जाति के लिए लाभप्रद होंगे।

यह पुस्तिका अपने समय में उर्दू भाषा में लिखी गयी थी और अब इसको डॉ. ओमप्रकाश भाटिया जी ने अपनी पिताजी की स्मृति को उजागर करने के लिए पहले हिन्दी में छपवाने का प्रस्ताव किया था और इसके लिए इन्होंने 5101/- रुपये की राशि पुस्तक के व्यय के लिए उपलब्ध करायी है। इसके बाद श्री भाटिया जी ने इस पुस्तक को अंग्रेजी में भी छापने का अनुरोध किया, ताकि इस पुस्तक का लाभ अंग्रेजी पढ़े-लिखे और विदेशों में रहने वाले सभी भारतीयों को भी प्राप्त हो। हिन्दी से अंग्रेजी में छापने के इस अनुरोध को मैंने स्वीकार किया। अब इस पुस्तक को द्विभाषा (हिन्दी एवं अंग्रेजी) में प्रकाशित किया जा रहा है।

यह पुस्तिका विद्यार्थियों के लिए विशेषतया लाभकारी है और यह बड़ा उत्तम कार्य होगा यदि इसकी एक-एक प्रति डी.ए.वी. तथा आर्यसमाज से सम्बन्धित विद्यालयों के पुस्तकालयों में भी उपलब्ध हो।

हरबंसलाल कोहली
(कार्यकर्त्ता प्रधान)

प्रस्तावना

समय प्रगति का है। हर रोज नये आविष्कार हो रहे हैं। प्राकृतिक उन्नति के साथ मनुष्य अधिक भौतिक होता जा रहा है। उसके भोग-विलास के द्रव भी बढ़ते जाते हैं। ईश्वर तथा सत्य से भी लोग मनाई कर रहे हैं। मौज उड़ाना तथा मनमानी प्रसन्नता प्राप्त करना लोगों की धारणा बन गयी है। सोचने वाले इस स्थिति को देखकर अश्रु बहा रहे हैं। यदि यह धारा इसी प्रकार बढ़ती गयी, तो मनुष्य जाति से अच्छाई लुप्त हो जायेगी। तब आनन्द का नाम ही रह जायेगा। संसारी आनन्द थोड़ा समय अपना रंग दिखाकर पीछे रुलाते हैं। वास्तविक आनन्द मनुष्य को अपने पर नियन्त्रण करने, अपने शरीर, मन तथा अपनी आत्मा को स्वस्थ, शक्तिशाली और ऊंचा करने से मिलता है। यह आनन्द स्थायी होता है। भला चाहने वाले व्यक्ति लोगों को इस धारा से हटाकर सच्ची प्रसन्नता का पथ दिखाने की ओर लगे रहते हैं। हर अच्छे प्रयत्न का फल अच्छा ही निकलता है। और कई लोग अच्छे रास्ते पर आ जाते हैं, जो पहले थोड़ा कठिन लगता है, परन्तु जैसे इस रास्ते पर मनुष्य बढ़ता जाये, उसका आनन्द बढ़ता जाता है।

इस ट्रेक्ट में सदाचार के नियम शास्त्रों से संग्रह करके साधारण भाषा में लिखे गये हैं, तथा थोड़े अक्षरों में बहुत बातें बता दी गयी हैं। इनकी व्याख्या की जाये, तो बहुत बड़ी पुस्तक बन जायेगी। इसे बार-बार पढ़ें तथा पढ़ावें, तो नयी-नयी बातें अपने आप सूझेंगी।

मुझे आशा है कि यह पुस्तक छोटे-बड़े स्त्री-पुरुष सबके लिए उपयोगी सिद्ध होगी। और भले पुरुष इसका प्रचार करेंगे।

(1) **आचाराल्लभते ह्यायुराचारदीप्सिताः प्रजाः।**
आचाराद्धनमक्षय्यमाचारो हन्त्यलक्षणम्॥

(2) When wealth is lost nothing is lost
when health is lost something is lost
when character is lost everything is lost

आचार से आयु मिलती है। आचार से मनचाही सन्तान मिलती है। आचार से न घटने वाला धन मिलता है तथा आचार से मनुष्य का बुरा व्यवहार मिट जाता है।

अंग्रेजी पंक्ति का अनुवाद जब केवल धन चला जाये, तो मनुष्य चिन्ता न करके जाने कि कुछ हानि नहीं हुई। जब स्वास्थ्य बिगड़े, तो मनुष्य की एक उपलब्धि समाप्त हुई, परन्तु जब चरित्र न रहे, तो जाने कि सब कुछ समाप्त हो गया। क्योंकि चरित्र बिगड़ जाने से स्वास्थ्य, धन, ख्याति, यश, व्यवहार, सुन्दरता तथा साख सब चली जाती है।

संस्कृत के अक्षर आचार का अर्थ चाल-चलन है। इसके पहले 'स' लगाने से अक्षर सदाचार बनता है, जिसका अर्थ अच्छा चाल-चलन है। आचार में मनुष्य का रहना-सहना, बड़े छोटों से मिलना-जुलना, समाज में बैठना, सम्बन्धियों का आचारण, हर प्रकार का व्यवहार आ जाता है। इसके साथ शुद्ध-आचारण, बुराइयों से हटना और पुण्यों को प्राप्त करना सम्मिलित है। अंग्रेजी अक्षर Character (करेक्टर) का अर्थ भी शुद्ध आचारण ही जानना चाहिए। इस ट्रेकट में केवल आर्य हिन्दु शास्त्रों में जो आचार सदाचार के नियम दिये गये हैं, उन्हीं को प्रस्तुत किया गया है। यह उत्तम तथा मनुष्य को ऊंचा उठाने वाले हैं। इन पर आचरण करने से सच्चा आनन्द मिलता है।

रामनाथ सहगल

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
आर्यसमाज अनारकली, मन्दिर मार्ग,
नई दिल्ली-110001

शुभकामना सन्देश

आदरणीय भ्राता हरवंश लाल कोहली जी,

सर्वदा आनन्दमय रहो, मेरी शुभकामनायें।

आपका पत्र दिनांक 14.09.2007 का प्राप्त हुआ। यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि आपके कुशल नेतृत्व में भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के अन्तर्गत ''सदाचार शिक्षा'' नामक पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसमें धर्म के 10 लक्ष्णों की व्याख्या की जा रही है। मुझे पूरी आशा है कि यह पुस्तिका समस्त आर्य जगत् एवं विशेषकर विद्यार्थियों के लिये ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक सिद्ध होगी।

मैं उक्त पुस्तिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी ओर से, अपने परिवार की ओर से एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की ओर से हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूं।

शुभकामनाओं सहित

रामनाथ सहगल
(प्रधान)
भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा

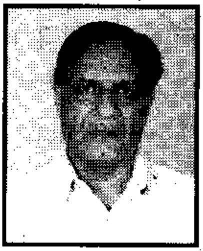

नरेन्द्र मोहन वलेचा

आर्यसमाज राजेन्द्र नगर

राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली

शुभकामना सन्देश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि "भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा" के तत्त्वावधान में तीसरी पुस्तिका "सदाचार शिक्षा" नाम से प्रकाशित की जा रही है जिसमें धर्म के व्यापक स्वरूप को विस्तार में वर्णन किया गया है। धर्म के सेवन से ही मनुष्य में सद्बुद्धि और विवेक का उद्य होता है। यह पुस्तक विद्यार्थियों के लिए विशेषकर उपयोगी सिद्ध होगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह प्रयास लोगों में विद्यमान आसुरी भावों का परिष्कार कर उन्हें सदधर्म और सदाचार की ओर आगे बढ़ने में प्रेरणा प्रदान करेगा। इस सत् कार्य की सफलता के लिए मेरी शुभकामनायें स्वीकार करें।

सधन्यवाद,

नरेन्द्र मोहन वलेचा
(महामंत्री)
भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा

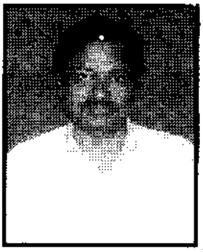

विनय आर्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं)
15, हनुमान रोड,
नई दिल्ली-110001

शुभकामना सन्देश

जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि आप भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की ओर से एक नवीन पुस्तक ''सदाचार शिक्षा'' के नाम से प्रकाशित कर रहे हैं। भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा जो कार्य कर रही है वे आज के परिपेक्ष्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। जिन बिछुड़े हुएं भाई-बहनों को हम स्वधर्म में वापस लाने के प्रयास में लगे हैं, उनमें तथा उनके बच्चों में संस्कार हेतु यह पुस्तिका अवश्य ही एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ साबित होगी; ऐसा हमें विश्वास है।

इस पुस्तिका का मूल्य कम से कम रखकर अधिकाधिक लोगों तक पहुंचाने का प्रयास करे, जिससे पुस्तक के उद्देश्यों को पूरा किया जा सके। धर्म के सही स्वरूप के विषय में इस पुस्तिका से आसानी से व्यक्ति जान सकेगा; ऐसा हमें विश्वास है।

पुन: पुस्तक के सफल प्रकाशन के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से शुभकामनाएं एवं हार्दिक बधाई।

सधन्यवाद।

(विनय आर्य)
महामन्त्री
मो. : 9350070988

सावित्री चौधरी

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा
बिरला लाईन, कमला नगर,
नई दिल्ली-110007

शुभकामना सन्देश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि शुद्धि सभा के अन्तर्गत और आपकी देख-रेख में एक ओर पुस्तक "सदाचार शिक्षा" के नाम से प्रकाशित की जा रही है जैसा कि पुस्तक नाम "सदाचार शिक्षा" है तो अवश्य ही यह पुस्तक ज्ञान वर्धक होगी और जो भी इसको पढ़ेगा वह लाभान्वित होगा ऐसा विश्वास है।

मैं इस पुस्तक के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शु:भ कामना देती हूँ और आपको बधाई देना चाहती हूँ। इस पुस्तक के छपने से शुद्धि सभा में साहित्य की कमी भी पूरी हो जायेगी। श्रीमती सावित्री चौधरी

सधन्यवाद,

श्रीमती सावित्री चौधरी
(उपप्रधाना)

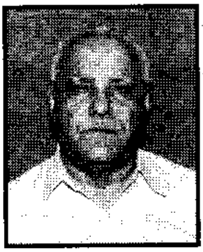

हरबंसलाल कपूर

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा
मन्दिर मार्ग,
नई दिल्ली-110001

शुभकामना सन्देश

आपका पत्र दिनांक 14.09.2007 को प्राप्त हुआ। यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के अन्तर्गत तीसरी पुस्तिका ''सदाचार शिक्षा'' नामक शीर्षक से प्रकाशित की जा रही है जिसमें धर्म के 10 लक्ष्णों का विस्तार से वर्णन दिया जायेगा।

मैं उक्त पुस्तिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी ओर से एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ। मुझे पूरी आशा है कि यह पुस्तिका समस्त आर्य जनों के लिये लाभदायक एवं प्रेरणादायक सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित।

(हरवंश लाल कपूर)
सहमंत्री

चन्द्रभान चौधरी

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा
बिरला लाईन, कमला नगर,
नई दिल्ली-110007

शुभकामना सन्देश

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के अंतर्गत तीसरी पुस्तिका "सदाचार शिक्षा" प्रकाशित की जा रही है, यह जानकर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हुई है।

मैं परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि आप इसी तरह की ज्ञान को बढ़ाने वाली, समाज को जागरूक करने वाली पुस्तकें प्रकाशित करते रहें।

आपकी पुस्तकें खूब रोचक व प्रेरणापूर्ण होती हैं। मझे आशा है कि यह पुस्तक भी वैसी ही होगी। प्रकाशित होने वाली पुस्तक के लिए अपनी शुभकामनाएं देते हुए-

चन्द्रभान चौधरी
संरक्षक
भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा

डॉ. रमा

हंसराज कॉलेज (हिन्दी विभाग)
दिल्ली विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली-110007

शुभकामना सन्देश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के अन्तर्गत तीसरी पुस्तिका "सदाचार शिक्षा" के शीर्षक से प्रकाशित की जा रही है।

मुझे विश्वास है कि धर्म के 10 लक्षणों के विस्तार पूर्वक वर्णन से युक्त यह पुस्तक न केवल विद्यार्थियों के लिए बल्कि समाज के हर युवा, हर व्यक्ति के लिए ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी होगी। इस पुस्तक से सदाचार का महत्व एवं उसकी उपयोगी जानकर अधिक से अधिक लोग अपने व्यावहारिक जीवन को भी सुखकर बनाने का प्रयास करेंगे। इसी आशा के साथ पुस्तक के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए

डॉ. रमा
फोन-9891172389 (मो.)

चन्द्रकला राजपाल

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा
बिरला लाईन, कमला नगर,
नई दिल्ली-110007

शुभकामना सन्देश

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा द्वारा प्रकाशित होने वाली ''सदाचार शिक्षा'' के लिए मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं। आशा है यह पुस्तक लोगों कै शारीरिक, आत्मिक, बौद्धिक और समाजिक चहुँमुखी विकास में सहायक सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित!

श्रीमती चन्द्रकला राजपाल
संरक्षिका
भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा

विशम्बरनाथ अरोड़ा

आर्यसमाज मन्दिर कृष्ण नगर
कृष्ण नगर,
दिल्ली-110051

शुभकामना सन्देश

मुझे यह जान कर अपार हर्ष हुआ कि भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा "सदाचार शिक्षा" नामक पुस्तिका प्रकाशित करने जा रही है। आज के अत्यन्त भौतिकवादी युग में भी आर्यसमाज की यह संस्था सदाचार के बारे में प्रयत्नशील है। प्रभु इनकी इस पुण्य कामना को सफल करें।

मैं शुद्धि सभा के इस अति सराहनीय कार्य के लिए सभा को बधाई देता हूं। ईश्वर करे कि यह पुस्तक एक मार्ग दर्शक प्रकाश स्तम्भ का काम करे।

शुभ कामनाओं सहित!

बिशम्बर नाथ अरोड़ा
संरक्षक
भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा

शकुन्तला दीक्षित

प्रान्तीय आर्य महिला सभा (दिल्ली प्रदेश)
नई दिल्ली

शुभकामना सन्देश

आपका पत्र पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आपके नेतृत्व में आपकी कार्यकुशलता भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा फिर एक नयी पुस्तिका ''सदाचार शिक्षा'' नामक शीर्षक से प्रकाशित करने जा रही है। इसके लिए मैं अपनी ओर से तथा प्रान्तीय आर्य महिला सभा की ओर से इस पुस्तक से सफल प्रकाशन की शुभकामना देती हूं। और आशा करती हूं कि वह पुस्तक समस्त मानव जाति के लिए लाभप्रद होगी। जो इसको अध्ययन कर उनके पहलुओं पर अमल में लाकर अपने जीवन को आचरणवान व सदाचारी बनेंगे।

सधन्यवाद!

शकुन्तला दीक्षित
प्रधान
प्रान्तीय आर्य महिला सभा

प्रेमशील महेन्द्र

प्रान्तीय आर्य महिला सभा (दिल्ली प्रदेश)

नई दिल्ली

शुभकामना सन्देश

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा द्वारा प्रकाशित यह लघु पुस्तक "सदाचार शिक्षा" को मैंने आद्योपांत पढ़ा; मुद्रित सारी समाग्री को जाना व परखा है, पुस्तक अत्यन्त उपयोगी, रोचक व सद्प्रेरणा दायक है। मानव जीवन को सफल बनाने के लिए व सभी प्रकार के लौकिक व्यवहारों में निखार लाने के लिए सार्थक व हृदय ग्राही उपाय पुस्तक में दर्शाए गए हैं। इस के अंतर्गत जीवन में ज्योति भरने वाले, मनु द्वारा बताए धर्म के दश अंगों का बहुत ही सार्थक, सरल व सुगम रूप में दक्षता पूर्ण चित्रण किया गया है। साथ ही जीवन को पतनोन्मुख करने वाले मानवीय शत्रु काम, क्रोध, लोभ, मोह व अंहकारादि पंच विकारों से इन्हीं धर्म के दश अंगो के आधार पर ही मुक्त होने की बात भी कही है। प्रत्येक आस्तिक सद्जन व्यक्ति जीवन में परम शांति व आनन्द प्राप्ति के लिए उत्सुक होते हुए पूजा, पाठ, जप-तप व यज्ञादि के द्वारा उद्देश्य प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है। इन सब का मानव जीवन में अपना विशेष स्थान है व महत्व है ही किन्तु अभीष्ट लक्ष्य की प्राप्ति के लिए "सदाचार" प्रथम सीढ़ी है। सदाचार, सद् विचार, सद्व्यवहार एवं सत्कर्मों के बिना वह सब सार हीन से हो जाते हैं। पुस्तक के लेखक ने धर्म के दश अंगों को आधार बना कर ही पंच विकारों से मुक्त होना ही सहज व सुगम होना बताया है और यही वास्तविकता भी है, सचमुच में यही प्रभावशाली ढंग भी है। पुस्तक समानभाव से हर व्यक्ति, हर क्षेत्र व जाति के लिए लाभदायक व उपयोगी है। मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास भी है कि अत्यन्त बुद्धिपूर्वक व सरल ढंग से लिखी यह पुस्तक जन साधारण को भाएगी। पढ़ने व जानने वाला हर व्यक्ति परम आनन्द, शांति, कीर्ति, यश व निर्भयतादि की उपलब्धि प्राप्त करने में सक्षम हो जाएगा। निश्चित ही शुद्धि सभा, पुस्तक के लेखन एव संबंधित सभी महानुभाव बधाई के पात्र हैं। अधिक से अधिक व्यक्ति इसे पढ़ कर के जीवन को व्यवहार कुशल व जन जन का हितैषी होकर यश को भी प्राप्त करें यह मेरी हार्दिक शुभकामना है।

प्रेमशील महेन्द्र
पूर्व महामंत्री
प्रान्तीय आर्य महिला सभा

प्रार्थना

स्व. सत्यराम आर्य

आपको छोड़ कर इस संसार सागर में गोते खा रहे हैं, हमारी जिन्दगी की किश्ती इस संसार सागर में मौजों से थपेड़े खा रही है। अनेक विवधान, असहनीय पीड़ायें, अनगिनत आपत्तियाँ, हृदय-दाहनी चिन्तायें हमें चारों ओर से घेरे हुये हैं। कोई पल, कोई घड़ी ऐसी नहीं जिस में चिन्ता रूपी डाकिनी हमारा संहार करने के लिए हमारे सामने न खड़ी हो।

आप ही इस जगत के पालन-पोषण करने वाले हो। आप सर्वअन्तर्यामी हो; हम आप से अपने मनो भावों को छिपा नहीं सकते, अतः आप के चरणों में उपस्थित होकर अवश्य निवेदन करेंगे।

और कौन है? जो दीन-दुखियों की पुकार सुने। हम दीन-हीन दुखी, दरिद्री तेरी संतान चारों ओर से भटक कर तेरी चरण शरण में आना चाहते हैं, और तुझ से ही सहायता के भिखारी हैं।

"फरिशते से बहतर है इन्सान बनना,
मगर इस में लगती है मेहनत ज्यादा॥"

अपने पुत्रों के कष्ट दूर करो, उन के संकट हरो, ताकि शान्त चित्त होकर तेरे गुण-गान कर सकें।।

स्वर्गीय महाशय सत्यराम जी आर्य
तौस्वी

सत्यराम जी का प्यारा भजन

ओ. पी. भाटिया

(1) जय जय पिता परम आनन्द दाता,
जगत आदि कारण मुक्ति प्रदाता।।
(2) अनन्त और अनादि विशेषण हैं तेरे,
तू सृष्टि का स्रष्टा धर्ता सहर्ता।।
(3) सूक्ष्म से सूक्ष्म तू है स्थूल इतना,
कि जिस में यह ब्रह्माण्ड सारा समाता ।।
(4) मैं लालित व पालित हूं पितृ स्नेह का,
यह प्राकृत सम्बंध है तुझ से दाता।।
(5) करो शुद्ध निर्मल मेरी आत्मा को,
करूँ मैं विनय नित्य सायं व प्रातः।।
(6) मिटाओ मेरे भय आवागमन के,
फिरूं न जन्म पाता और बिलबिलाता।।
(7) बिना तेरे है कौन दीनन का बन्धु,
कि जिसको मैं अपनी अवस्था सुनाता।।
(8) "अमी" रस पिलाओ कृपा करके मुझको,
रहूं सर्वदा तेरी कीर्ति को गाता।।

(II) गायत्री मन्त्र का उर्दू अनुवाद

(1) वो खुदाए पाक वो जाने जहाँ,
वो नफस की आमदोशुद का ज़माँ।
(2) जात जिसकी दर्द दुख से है बरी,
दूर सब दुःख दर्द करता है वही।
(3) पाक खुद इसीयाँ से, वो करता है पाक,
है बसद्शाने तजल्ला तावनाक।
(4) इक वही है नकश बन्दे हस्तबूद,
लायेके ताजीमों तकरीमो सजूद।
(5) चश्मा है जो राहते जावेद का,
नेहमते सब को वो करता है अता।
(6) करते हैं नूरे अजब का ध्यान हम,
और माँगते हैं यह दुआ हर आन हम।
(7) दे हमारी अक्ल को सिद्को सिफा,
और इसे नेकी के रस्ता पर चला।।

I

परिवार, जाति, समाज, देश की मर्यादा का पालन करना शिष्टाचार या सभ्यता कहलाता है। मनु महाराज ने इस बारे में विस्तार से लिखा है।

1. बड़ों का आदर करो। जब मिलें, हाथ जोड़कर प्रणाम करो। उनके बायें ओर चलो। अपने बड़ों की सेवा करो। मनु महाराज कहते हैं कि बड़ों की सेवा करने से आयु, बुद्धि, यश तथा शक्ति में वृद्धि होती है। परिवारों में बड़ों का आदर करने से नियन्त्रण भी ठीक रहता है।

2. जब कोई व्यक्ति मिलने के लिए आये, तो हंस कर उसका स्वागत करना चाहिए। बैठने के लिए आसन देना चाहिए और जब जाये, तो विदाई के समय ईश्वर आपका कल्याण करे, आपकी यात्रा सुखद हो, स्वस्ति खुदा हाफ़िज़ आदि अक्षरों का प्रयोग करना चाहिए।

   मिलते और अलग होते समय, माता-पिता अध्यापक, गुरु आदि बड़ों को हाथ जोड़कर माथे तक ले जाकर, झुककर नमस्कार करना चाहिए। और बराबर वालों में दोनों हाथ जोड़कर खड़े होकर नमस्कार करें या हाथ मिलावें। जहां अधिक प्रेम हो, वहां गले मिलना चाहिए।

3. स्वयं जब किसी के घर मिलने जाओ, तो बिना सूचना भीतर मत जाओ। किसी भी कमरे में द्वार को खटखटाकर या आज्ञा लिये बिना एकदम खोलकर भीतर नहीं जाना चाहिए। चाहे अपने ही घर में क्यों न हो; और मिलने पर आवश्यक

बातचीत संक्षेप से करो। बिना कारण न बैठो। उसकी अपनी इच्छा हो, तो अधिक रुक सकते हैं। अपनी ओर से जितना शीघ्र हो सके, उनसे विदा ले लो।

4. बैठते या चलते समय बड़े को अपनी दाहिनी ओर रखो। स्त्री बड़ी हो या छोटी, जैसे माता, बहिन, बेटी सब को दाहिनी ओर बिठाओ। दाहिने बिठाना आदर के लिए है। परन्तु अपनी पत्नी को बायें ओर बिठाना शास्त्र का आदेश है। इससे बैठते, चलते, फिरते पता लग जाता है कि धर्म पत्नी के साथ जा रहे हैं। या किसी दूसरी रिश्तेदार के साथ। बायीं ओर हृदय के निकट रखने से प्रेम का भी संकेत है।

5. जब किसी से कुछ लें या वह तुम्हारा काम करे, तो उसको धन्यवाद, मेहरबानी, शुक्रिया या Thank you कहो। यदि कोई भूल हो जाये, तो क्षमा या I am sorry कहो। दूसरे की भूल पर सच्चे दिल से निकले वाक्य सुनकर क्रोध को शान्त करके हंस के अस्तु, जी या That is alright कहो।

6. दो व्यक्ति बातें करते हों, तो उनके बीच से न गुजरो। उनकी बात को वैसे ही न टोको। बिना बुलाये अपनी राय किसी जगह देने न लग जाओ। अपनी बुद्धि जतलाने के लिए व्यर्थ बकझक न करते जाओ। काम की बात कहो। आपस की बातचीत में खेंचतान करके लड़ाई की नींव न डालो।

7. सभा सोसाइटी में उस जगह न बैठो, जहां से उठाये जाने की आशंका हो। दूसरों को तंग करके आगे जाने का प्रयत्न न करो। शान्ति से कार्यवाही सुनो। शोर न करो। एक-दूसरे से बातें न करो। यदि आवश्यक हो, तो धीरे से कान में कहो,

खांसी, छींक आये, तो मुख के आगे रूमाल ले लो, ताकि दूसरे पर छींटे न पड़ें। डकार आदि पर शब्द न होने दो। कपड़े अच्छे पहनकर जाओ, जो शुद्ध हों। यदि पहले जाना है, तो एक तरफ बैठो, ताकि दूसरों को आपके जाते समय कष्ट न हो। बोलना हो, तो दलील के साथ विषय के अन्दर बोलो।

8. सभा सोसाइटी में जाते हो, तो बेकार कटाक्ष और बहस में पड़कर बकझक करना और सभा को बिगाड़ना बुरा काम है। अपनी बात को सिद्ध करने के लिए सत्य असत्य बोलकर दूसरों को साथ मिलाने का प्रयत्न निन्दनीय है। न्याय से काम लो, तो सोसाइटी का काम ठीक चलेगा। किसी देश की सभ्यता इसी से देखी जाती है।

9. घर में भाई-बहिन, माता-पिता तथा दूसरे सम्बन्धियों से प्रेम करो। बड़ों से नम्रता से बात करो और बड़ों का कहा मानो। परन्तु यदि कोई बड़ा सदाचार के विरुद्ध बात करे, तो उस पर कार्य नहीं करना चाहिए। घर में फूट न डालो, न डालने दो। फूट हमारे देश में बहुत है और इस से बहुत हानि हुई है। साम्प्रदायिक फूट तो एक तरफ, अच्छी काम करने वाली संस्थाओं में भी झट फूट पड़ जाती है।

जो कोई इस फूट का निवारण करने का प्रयत्न करता है, वही देश का सच्चा हितकारी है।

10. घर में या बाहर मीठी वाणी एक जादू है।

II

11. दूसरे के धन, स्त्री-जमीन पर कभी लोभ की दृष्टि से न देखो। दूसरे की स्त्री को माता के समान जानो। दूसरे के धन को मिट्टी समझो। नेक लोग जिस स्त्री को देखें, उसकी आयु के अनुसार बेटी, बहिन या मां समझकर आंख सदा नीचे रखते हैं।

12. बुरी संगत में न बैठो। न ही अधिक समय बुद्धिहीन, मूर्ख लोगों के साथ गुजारो। इससे मनुष्य अच्छी बातें कम सीखता है और यदि कोई बुरी आदत, जैसे—शराब, जुआ खेलना, धूम्रपान, चोरी, यारी आदि लग गयी, तो अपना सत्यानाश कर बैठता है।

13. विद्यार्थी को बुरे लड़कों की संगत से दूर रहना चाहिए। कभी-कभी बुरे अध्यापक भी अपनी सन्तान की तरह शिष्यों को बिगाड़ते हैं, इनसे भी बचना चाहिए। अनुभव न होने से जल्दी बुरी आदतें पड़ जाती हैं। उनका शरीर मस्तिष्क निर्बल हो जाते हैं और सारे जीवन का आनन्द जाता रहता है।

मनुष्य के तेज, शक्ति तथा बुद्धि, वीर्य (बीज) पर आधारित है। जैसा पेड़ का बीज, वैसा ही वृक्ष बनता है। वीर्य हमारी खायी वस्तुओं का निचोड़ है। खाद्य पदार्थों का पहले रस, फिर खून, मांस, चरबी, हड्डी, मज्जा और फिर वीर्य बनता है। अन्दर रहने से शरीर शक्तिशाली और निकलते रहने से नाश होता है। व्यायाम करने, शुद्ध विचार रखने, नशीली और उत्तेजक ऊष्ण वस्तुएं न खाने से शरीर के अन्दर रहता है। बुरे नावल पढ़ना, सिनेमा तथा अशलील चित्र देखना, मित्रों में बैठकर गन्दी बातें करना, व्यायाम न करना, पेशाब करने का स्थान शुद्ध न रखना और बार-बार हाथ लगाने से वीर्य शरीर से बाहर आने लगता है, जो हानिकारक है।

हस्त मैथुन से भी बचना चाहिए। स्वप्न दोष से भी अंग शक्तिहीन हो जाते हैं, स्मरण शक्ति क्षीण हो जाती है।

वीर्य दस वर्ष की आयु से बनने लगता है, 16 वर्ष की आयु में बहुत पैदा होता है, उस समय तरह-तरह के विचार उठते हैं, उनको दबाकर और व्यायाम से जज़ब करने से 25 वर्ष की आयु में पक जाता है। इससे शरीर की नींव पक्की हो जाती है और शरीर रूपी भवन दृढ़ रहता है। स्वास्थ्य और आयु बढ़ती है। यही समय विवाह करके सन्तान उत्पन्न करने का है, इससे पहले सन्तान भी निर्बल होती है।

इसी विषय में मनु महाराज ने विद्यार्थियों को आदेश दिया है कि ब्रह्मचारी (विद्यार्थी) मदिरा, मांस, सुगंधित पदार्थ, पुष्पों की माला, स्वादिष्ट पदार्थ, स्त्रियों का संग, खटे पदार्थ, अंग मलना, बिना कारण मूत्र नली को छूना, सुरमा, काजल लगाना, काम-क्रोध-लोभ, मोह, अहंकार, चिन्ता, इर्ष्या, वैर, नृत्य करना देखना, गाना बजाना, एक-दूसरे का अपमान, निन्दा, स्त्रियों को देखना, अशुद्ध अक्षर बोलना, दूसरों को हानि पहुंचाना आदि सब त्याग दे। सदा अकेला शयन करे। वीर्य पतन न होने दे। यदि कोई इच्छा से वीर्य गिरावे, तो उसका ब्रह्मचर्य नष्ट हो गया।

इसी प्रकार स्वामी दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में लिखते हैं-

जो विद्या पढ़ने-पढ़ाने के विघन है, उनको छोड़ देवें, जैसे कामी पुरुषों का संग, मदिरा का प्रयोग, स्त्री प्रसंग, बाल-विवाह, अधिक भोजन, अधिक जागना, पढ़ने-पढ़ाने, परीक्षा देने में आलस्य व बेइमानी, ब्रह्मचर्य से शक्ति, बुद्धि, स्वास्थ्य आदि का महत्त्व न समझना, ईश्वर की उपासना छोड़ औरों में ध्यान लगाना इत्यादि।

बुद्धिमान के लिए संकेत पर्याप्त है, तो समझेंगे, बड़े होकर प्रसन्न होंगे; दूसरे पश्चात्ताप करेंगे और कहेंगे काश हम परामर्श मान लेते।

III

14. जो व्यक्ति केवल शरीर का ध्यान रखता है, मन की परवाह नहीं करता, वह अपूर्ण है। मस्तिष्क तथा मन में अन्तर है। मन-मस्तिष्क द्वारा कार्य करता है, परन्तु मस्तिष्क से सूक्ष्म है। मन सोचता है, महसूस करता है, चाहता है, घृणा करता है, स्मरण करता है, दलील करता है, अच्छाई बुराई जानता है और मनुष्य को सदाचारी बनाता है। विपरीत मार्ग पर जाने से दुराचारी भी बना देता है। मन के सूक्ष्म भाग को बुद्धि कहते हैं। यह मनुष्य को अच्छे मार्ग पर ले जाती है। मन का मलिन भाग दूरदर्शी नहीं होता। तातकालिक सुख और आनन्द चाहता है। सवेरे जागना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है। मन चाहेगा कि इस समय निद्रा का आनन्द कौन छोड़े। परन्तु बुद्धि कहेगी कि अभी थोड़ा कष्ट सहने से आगे अधिक सुख मिलेगा। वह उठ बैठेगा। ऐसे ही बुद्धि हर विषय में मार्ग दर्शाती है। ऐसे व्यक्ति सदाचारी बन जाते हैं।

जो मन का कहना मानते हैं, वह गिर जाते हैं। गीता में भगवान् कृष्ण ने शरीर को एक रथ की उपमा दी है, जिसमें आत्मा स्वामी और इसके घोड़े पांच ज्ञानेन्द्रियां (आंख, नाक, कान, जीभ तथा चर्म) और पांच कर्मेन्द्रियां (हाथ, पांव, मुख, शोच तथा मूत्र के अंग) हैं। इन घोड़ों को बुद्धि सारथि बनकर मन लगाम द्वारा चला रही है। परन्तु यदि बुद्धि लगाम ढीली कर दे, तो घोड़े इधर-उधर भागकर रथ को चकना चूर कर देंगे। यदि बुद्धि मन रूपी लगाम खींचकर रखे, तो घोड़े लक्षय पर पहुंचा देंगे।

इच्छाओं के पीछे चलना लगाम ढीला छोड़ना है। और इच्छाओं को वश में रखकर, अच्छी इच्छा पूरी करना तथा बुरी इच्छा दबाना बुद्धि के पीछे चलना है।

इसी प्रकार व्यवहार में सदाचार तथा जैसा बर्ताव हम दूसरों से चाहते हैं, वैसा बर्ताव उनसे करना, बुद्धि के अनुसार चलना है। और अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए दूसरों के साथ भद्दा बर्ताव करना मन के पीछे चलना है। यही दुरव्यवहार है। नेकी और सदाचार के मार्ग पर चलने वालों के लिए कुछ परामर्श नीचे दिये जाते हैं।

15. लज्जा पुरुष स्त्री दोनों का आभूषण है। अपने को पसन्द करने का भाव अहंकार, अपनी बुद्धि और अपने कार्यों की प्रशंसा करना, अपने मत को ऊंचा समझना, चाटूकारिता, धनहीन से घृणा, मातहत (अधीन) से अभिमान, अपने रूप, वस्त्र आदि की प्रशंसा की दूसरों से आशा करना, जग हंसाई का कारण बनता है।

16. ईर्ष्यालु मनुष्य का हृदय द्वेष और मन-मुटाव से भरा रहता है, दूसरों की प्रशंसा सह नहीं सकता और अपने आपमें ही कुढ़ता रहता है। यदि तुम महान् बनना चाहते हो, तो महान् पुरुषों के आदर्श सामने रखकर उन पर चलो। नेक काम का अनुकरण करने से मन ऊंचा होता है।

17. बातूनी पुरुष समाज के लिए संकट है। कान उसके बकवास सुनते थक ज़ाते हैं, पर वह नहीं समझता। उसका शेखी बघारना और अपने को हर विद्या का विशेषज्ञ कहना उसे नीच बना देता है। मूर्ख मनुष्य वाणी को विराम नहीं देता।

18. किसी को चिड़ाना, हंसी उड़ाना, अन्धे लूले कुरूप को देखकर हंसना, हर एक को ताने देना अपने सुख-चैन में बाधा डालना है।

19. घृति धर्म का पहला लक्षण है। शूर्ता तथा सन्तोष से हृदय सशक्त होता है। कठिनाई और दु:ख में अपने सिद्धान्त से न गिरना शूरता

है। परिश्रम कर। पर ईश्वर जो कुछ देवे, उस पर सन्तोष करना और हर अवस्था में मन को प्रसन्न रखना धैर्य है। दुःख, दुर्भाग्य और हानि हर मनुष्य के पीछे लगे हैं। इसलिए पहले ही साहस और धैर्य से हृदय को सशक्त रखना चाहिए। वीर पुरुष प्रारब्ध को घृणा की दृष्टि से देखता है। अपनी इच्छायें बढ़ाकर अधीर और दुखी मत हो। ईश्वर तेरे कर्मों के अनुसार तुमको फल दे रहा है। और तेरी भलाई के लिए तेरी अधिक इच्छाऐं पूर्ण नहीं करता।

20. धर्म का दूसरा लक्षण क्षमा है। भूल से कोई अपराध करे, आधीन भूल करें। कोई मूर्खता से अपमान करे, उसको सामर्थ्य होने पर भी क्रोध न करना क्षमा है। इससे जो क्रोध मस्तिष्क में हलचल करने वाला तथा रक्त में उबाल लाने वाला है, शान्त हो जाता है। शरीर में हलकापन आता है, स्वास्थ्य बढ़ता है और हृदय प्रसन्न रहता है।

21. धर्म का तीसरा लक्षण दम अर्थात् संयम है। एक ऋषि ने कहा है, स्वास्थ्य, बुद्धिमत्ता, हृदय की शान्ति के बिना सच्ची प्रसन्नता मिलना सम्भव नहीं है और यह वस्तु कामी मनुष्य को प्राप्त नहीं हो सकती। जब कामुकता स्वाद की वस्तुएं सामने फैला देवे, रंग-रलियों की ओर झुका देवे, मदिरा, मांस, विषय भोग की झलक दिखावे, उस समय बुद्धि से मन की लगाम खींच ले। और भ्रमात्मक मार्ग में न फंस। स्वास्थ्य का पिता व्यायाम तथा माता संयम है।

कामुक मनुष्य का अन्त बदनामी, बीमारी, दरिद्रता, दुःख, पश्चात्ताप तथा आत्मा का पतन है।

22. मनु महाराज ने धर्म का चौथा लक्षण अस्तेय (चोरी न करना) लिखा है, अर्थात् दूसरे का अधिकार न छीनना। और ना बुरी

नीयत ही करना। मन में कुछ और हो, कहे कुछ और, यह मन की चोरी है। किसी ने कोई संदेश दिया, उसको उलट बनाकर कुछ और कह दे, यह वाणी की चोरी है। सदाचारी को हर प्रकार की चोरी छोड़नी चाहिए। सत्यनिष्ठ मनुष्य हर स्थान पर आदर पाता है, उसकी साख बड़ी होती है।

23. धर्म का पांचवा लक्षण शोच (सफाई) है। वस्त्र (चाहे वह कीमती न हों), गृह, खाने-पीने की वस्तुएं, सबको स्वच्छ रखना विनोदप्रियता का लक्षण है।

शरीर की सफाई से बढ़कर मन की सफाई है। मनु महाराज लिखते हैं कि जल से शरीर शुद्ध होता है, सत्य से मन शुद्ध होता है और बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है।

24. धर्म का छठा लक्षण इन्द्रियनिग्रह है। स्वामी दयानन्द ने इस का यह अर्थ किया है कि इन्द्रियों के विषयों में न फंसें। चक्षु का कार्य देखना है, परन्तु कामिक दृष्टि से देखना बुरा है। इसी प्रकार कान, नाक, जीभ आदि के बारे में समझना चाहिए। यदि एक इन्द्रिय भी विषय भोग में फंस जाये, तो मनुष्य की बुद्धि दूषित होती चली जाती है। जैसे बर्तन (पात्र) में एक छिद्र होने से जल का निकास होता रहता है।

25. सातवां लक्षण धी है। इसका अर्थ है कि प्रत्येक कार्य सोच-विचार और दूरदर्शिता से करना, उतावलापन, संसार की क्षण भंगुरता का ध्यान रखना, संसार को समझने का प्रयत्न करना, मनुष्य क्यों आया कहां जाना है, क्या इसका कर्तव्य है, क्या उसका उद्देश्य है। ऐसी बुद्धि रखने से मनुष्य उपकार के मार्ग पर चलता है।

26. विद्या धर्म का आठवां लक्षण है। विद्या मनुष्य का आभूषण है। पुरुष-स्त्री सबको विद्वान बनने का प्रयत्न करना चाहिए। उत्तम विद्या वही है, जिससे व्यक्ति नम्र बनता है। जिस से धर्म और संसार के भेद खुलते हैं।

27. धर्म का नवां लक्षण सत्य है। एक महात्मा के शब्द हैं कि सत्यता सीख तो पछतावा भूल जावेगा। फिर तुझे शपथ ग्रहण करने की आवश्यकता न पड़ेगी। सत्य केवल एक है, संशय तेरे अपने पैदा किये हुए हैं। सत्य मोतियों से अधिक मूल्यवान है। इसका आकांक्षी बन।

मार्ग में थककर साहस न छोड़। जब तू उस तक पहुंचेगा, तेरा परिश्रम प्रसन्नता में बदल जायेगा। ऐसा मत कहो कि सत्य घृणा पैदा करता है, अवसरवाद धन दिलाता है। सत्य के कारण बने शत्रु, चाटूकारिता से मिले मित्रों से अच्छे हैं। मनुष्य वैसे तो सत्य की इच्छा रखता है, परन्तु जब वह उसके सामने आता है, तो वह उसे अपनाता नहीं। सत्य में कोई दोष नहीं, मनुष्य अपनी कायरता से उसे अपनाता नहीं।

28. धर्म का दसवां लक्षण अक्रोध है। अर्थात् व्यर्थ में हर बात पर क्रोध न करते रहना। हर समय झुनझुलाहट में रहने से मन में शान्ति नहीं रहती। क्रोध से धीरज, बुद्धि, विद्या, धर्म सब दब जाते हैं और संसार में बहुत से अनर्थ इसी से हुए हैं। जैसे तूफान या भूकम्प नष्ट भ्रष्ट कर देता है, इसी प्रकार क्रोधी अपने पास विध्वंस फैलाता है। द्वेष को हृदय में न रख, यह तुझे कलेश में डालेगा।

29. अपनी सफलता में इतना न फूल कि तू मस्त होकर अहंकारी हो जावे। न अपने दु:ख को इतना भारी होने दे कि तेरे हृदय तथा मस्तिष्क को दबाकर चकनाचूर कर दे। हर्ष उल्लास में ईश्वर का

धन्यवाद कर, दु:ख को वीरता से सहन कर, न्यायकारी के न्याय को इसमें देख।

30. अन्धे, लूले, बहरे, लंगड़े, निर्धन, विवश, बीमार, भूखे, प्यासे, दुखी आदि को देखकर जिसका हृदय नहीं पसीजता, करुणा के अश्रु जिसे कभी नहीं आते, चीखते-चिल्लाते पशुओं पर जिसे दया नहीं आती, वह स्वयं भी किसी दया का अधिकारी नहीं है। कुरूप, बुरे अंग वालाा, कुबड़े, बूढ़े, रींगते को देखकर जो दया की बजाय उपहास करता है, वह मनुष्य कहलाने के योग्य नहीं है।

31. बुद्धि ईश्वर द्वारा दिया वरदान है। यदि तुझे मिली है, तो अनपढ़ों को शिक्षा दे। मगर उन को घृणा से न देख। मूर्ख की अनुचितता को सहन कर। सच्ची बुद्धिमत्ता से अपने ऊपर इतना घमण्ड नहीं आता, जितना मूर्खता से। हर बात को बुद्धि की कसौटी से विचार कर। सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सदा तत्पर रह। मूर्ख ढीठ होता है, वह सिवाय अपनी मूर्खता के हर विषय को जानने का दावा करता है। अहंकार घृणा के योग्य है। बुद्धिमानों से अपनी बुद्धि बढ़ाने का हर समय प्रयत्न करता रह। अधिक बकवास मूर्खता है।

32. यदि तू धनवान है, तो ईश्वर का धन्यवाद कर और अपने धन को पवित्र कार्यों में लगा। गरीबों की आवश्यकताएं बिना दिखावे के पूरा करने का प्रयत्न कर। अभिमान में पड़कर बुरे मित्रों की सलाह से धन को नष्ट न कर। यदि तू गरीब है, तो जितना प्रभु ने दिया है, उस पर सन्तोष कर।

पुरुषार्थ की कमाई से स्वस्थ रहेगा। धनवानों के भारी खाद्य पदार्थों से बीमार न होगा। धीरज की बढ़ोतरी मिलने से गरीब को जो आनन्द मिलता है, वह धनवानों को गदेलों और नरम बिछोनों पर नहीं मिलता।

33. यदि ईश्वर ने तुम्हें मालिक बनाया है, तो अपने कर्मचारियों से न्याय का बर्ताव कर। उनको आज्ञा देने में औचित्य पर ध्यान रख। दबाव और सख्ती उनका प्रेम तेरी ओर नहीं खेंच सकते। यदि तू कर्मचारी है, तो स्वामी की झिड़क धीरज से सह। अपने कार्य में तत्पर रहो। विश्वसनीयता तथा सचाई से स्वामी को प्रसन्नता मिलती है।

34. किसी के किये हुए उपकार को भूलना, उसको छिपाने का प्रयत्न करना, उपकार करने की स्थिति में होने पर ईर्ष्या करना नीचता है। कृतज्ञ व्यक्ति उपकार का बदला देकर प्रसन्न होता है। यदि वह बदला देने की हालत में न हो, तो उसका समर्ण प्रेम से हृदय में रखता है। यदि भगवान् ने तुझे उपकार करने के योग्य बनाया है, तो शेखी बघारकर उपकार मानने वाले को लज्जावित न कर। नेकी कर और भूल जा।

35. शास्त्रों में काम, क्रोध, लोभ, मोह (अनुचित प्रेम) और अहंकार मनुष्य के पांच शत्रु माने गये हैं। यह उसे आचार से गिराते हैं, और सीमा से बाहर निकले मनुष्य को भड़काते हैं।

36. मनुष्य के लिए सब दुखों में चिन्ता सबसे अधिक है। चिन्ता चिता के बराबर है। यह हमारे लिए तो स्वाभाविक है, हर्ष तो कभी-कभी प्राप्त होता है, और शीघ्र समाप्त हो जाता है। चिन्ता का प्रभाव देरी तक रहता है। दु:ख, कठिनाई व आपत्ति अपने आप आते हैं, हर्ष उल्लास का मूल्य देना पड़ता है।

हर्ष अधिक हो, तो भी विदित नहीं होता। चिन्ता थोड़ी भी तंग करती है। इसलिए चिन्ता को चिन्ता से मत बढ़ा। चिन्ता में न डूबा रह। कष्ट का विचार कष्ट से भी अधिक कष्टदायक है। भुगते हुए दु:ख को विसार कर समय का सदुपयोग करो। तब तुम समाज का उत्तम अंग होगे। घटना होने से पहले रोने वाला, उससे अधिक रोता है।

37. कृपण मनुष्य अपनी सन्तान, स्त्री, माता, पिता और सम्बन्धियों के बारे में अधिकार भी पूरे नहीं करता। धन उसे सबसे अधिक प्यारा है। कृपणता से बढ़कर बुरी बात व्यर्थ व्यय करना है, क्योंकि यह भी समस्त सम्बन्धियों तथा गरीब लोगों के प्राकृतिक अधिकारों का हनन करता है। धन प्राप्त करके अच्छी प्रकार से जीवन व्यतीत करना कठिन है। जो व्यक्ति अपने धन को बुद्धिमत्ता से खर्च करता है, वह आपत्तियों को दूर करता है। तथा समाज में एक अच्छा आदर्श स्थापित करता है।

38. हंसमुख व्यक्ति जब मित्रों में बैठता है, तो सबकी उदासी दूर करता है। उदासी आत्मा की दुर्बलता से पैदा होती है। हंसमुख का मुख दूसरे के मुख पर भी मुसकराहट पैदा करता है। परन्तु इस बात का ध्यान रखो, कि चरित्र से गिरे विनोद, आचार को बिगाड़ देते हैं।

39. अच्छाई, बुराई, वैध, अवैध का निर्णय हर मनुष्य का अन्त:करण ही कर देता है, यदि वह सच्चे हृदय से उसकी आवाज को सुने। स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि कोई भी अवैध कर्म करते समय मनुष्य के हृदय में भय, संशय तथा लज्जा उत्पन्न होती है और पवित्र कार्य करते समय उल्लास तथा मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त होती है। जो अपने लिए ठीक लगे, वह दूसरों के

लिए भी ठीक जानो। यह भी अन्तरात्मा की आवाज से ठीक लगती है।

मनुष्य चाहता है कि कोई उससे गाली गलोच न करे, कोई मेरी वस्तु न चुरावे। कोई मेरी बहु-बेटी पर अभद्र दृष्टि न डाले, कोई मुझे गाली न दे। कोई मेरी उन्नति से ईर्ष्या न करे, कोई मेरे कार्य में रोड़ा न अटकावे। कोई मुझसे असत्य भाषण न करे। तब उसे दूसरों से भी ऐसी कोई बात नहीं करनी चाहिए। जो अपने लिए पसन्द नहीं करते, वह दूसरों के लिए क्यों पसन्द करो।

40. यदि हर व्यक्ति कर्तव्य का पालन करे, तो संसार स्वर्ग हो जाये। लोग अधिकार चाहते हैं, कर्तव्य पालन नहीं करते। तुम जिस अवस्था में हो, अधिकारी या मातहत, भाई या बहिन, पत्नी या पति, बेटा या पिता, दुकानदार या कलर्क (लिपिक), न्यायाधीश या मैजिस्ट्रेट, उधार देने वाला या लेने वाला, छोटे या बड़े, यदि अपने कर्तव्य का पालन करें, तो लोक-परलोक दोनों सुधर जायें।

41. जो कार्य स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, वह सब चरित्र से गिरे हुए हैं। अपने स्वास्थ्य का सदा ध्यान रखो। इसके लिए चार मौलिक नियम हैं–

(1) ब्रह्मचर्य, छोटी आयु में विवाह न करना और बुरी आदतों में न फंसना

(2) व्यायाम, प्राणायाम (स्वच्छ वायु में), सैर करना (खुली हवा में)

(3) शुद्ध आहार, सादा भोजन चबा-चबाकर भूख रखकर खाना, नशीले पदार्थों से बचना।

मानसिक शक्ति, संकल्प शक्ति को बढ़ाना। मन से शरीर का स्वास्थ्य प्रभावित होता है। हर समय रोग का विचार छोड़ स्वास्थ्य को सामने रखना और मन की शक्ति से अपने पर नियन्त्रण रखना।

42. अहंकार बुरा है, परन्तु अपने आपको हीन समझकर हर एक के आगे झुकना भी ठीक नहीं। मनुष्य का अपना आत्मसम्मान होना चाहिए, अपना आदर स्वयं करना चाहिए, तब लोग तुम्हारा आदर करेंगे। अपने पर विश्वास रखो, हिम्मत करो।

43. प्रतिज्ञा सोच समझकर करो। पर जब करो, तो उसको पूरा करो। समय की पाबन्दी करो, जिस समय किसी को मिलने का वचन दिया है, उसको निभाओ। समय की कदर करना सीखो। अवकाश का समय अपने उत्थान में लगाओ। समय बहुत मूल्यवान है, इसे न गंवाओ।

44. नेक आचार मनुष्य को सर्वप्रिय बनाते हैं। उठने, बैठने, चलने, फिरने, मिलने जुलने, बातचीत करने, खाने-पीने, सभा सोसाइटी में जाने, दावतों में सम्मिलित होने, मल-मूत्र त्याग करने, नहाने धोने, जीवन के हर भाग में नेक आचार की आवश्यकता है। यह कार्य उत्तम रीति से और समाज के नियमों के अनुसार भी किये जा सकते हैं और व्यर्थवाद तथा उजडपन से भी। नेक आचार मनुष्य की पदवी और उसके सदाचार (नेक चलन) को प्रकट करते हैं।

स्वभाव, जो घर कर जाता है, उसका जाना कठिन है। इस वासते बुरी आदतें न डालें। आदतें अनजाने में पड़ती रहती हैं, उन पर कठोर दृष्टि रखनी चाहिए।

45. दुराचारी मनुष्य संसार में अनादर पाता है। सदा दुःख पाता है। रोगी रहता है, छोटी आयु पाता है, परन्तु जो सदाचारी है, उसमें विद्या आदि गुण न भी हों, तो भी वह सुखी रहता है और सौ वर्ष तक जीता है। (मनु)

46. आचार से गिरे ब्राह्मण को वेद पढ़ने का फल नहीं मिलता, परन्तु सदाचारी मनुष्य को धर्म का पूरा फल मिलता है। दान देने के योग्य वही ब्राह्मण है, जिसमें विद्या व आचार दोनों हों। (मनु)

47. सबका विद्वान् बनना तो कठिन है, पर सदाचारी सब बन सकते हैं। (स्वामी दयानन्द)

48. जो व्यक्ति शराब नहीं पीता, परस्त्री की मन से भी इच्छा नहीं करता, वह स्वर्ग लोक में जाता है। (एक कवि)

49. जहां अग्नि जलती है, वहां वृक्ष कहां; जहां द्यूत होता है, वहां कल्याण कहां। (एक कवि)

50. तप, व्रत, यश, विद्या, अच्छा कुल, मन की स्वच्छता और आयु—वेश्या इन को ऐसे काट देती है, जैसे कुल्हाड़ी पेड़ को। याराने से इन सब वस्तुओं के अतिरिक्त यश भी मिट्टी में मिल जाता है। झगड़ा बढ़ता है, मरने मारने तक की स्थिति आती है। (एक कवि)

51. जो पराई स्त्री, पराये धन की चोरी या बल प्रयोग से अधिकार करता है, जो अपने बड़ों और गुरु की बात को ध्यानपूर्वक नहीं सुनता और उनको दुखी रखता है, उसको न इस लोक में सुख मिलता है और न परलोक में।

।। ओ३म् शान्तिः ।।

एक व्यक्तित्व-श्री रामभज बत्रा जी

रामभज बत्रा

श्री रामभज बत्रा अपने जीवन में हर प्रकार से संपूर्ण व्यक्तित्व के स्वामी थे, वह आर्य समाज में एक विशेष स्थान रखते थे। आर्य समाज के हर कार्य से जुड़े हुए थे। आर्य समाज के भिन्न-भिन्न पदों पर रहते हुए भी वह केवल एक कार्यकर्ता थे। उन्होंने कभी भी यह नहीं दर्शाया कि वह पदाधिकारी हैं, वह तो अपने को एक कार्यकर्त्ता ही मानते थे तथा छोटे से छोटे कार्य करने से भी कभी नहीं चूकते थे। कहने को तो वह भारतीय हिन्दु शुद्धि सभा के अखिल भारतीय प्रधान थे परन्तु उनके जीवन का लक्ष्य केवल लोगों को अपने प्यार से, आचरण से आर्य समाज की ओर आकृष्ट करना था न कि दबाव से।

कई दृष्टांत ऐसे भी आए जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। एक बार फिरोजशाह कोटला मैदान में आर्य सम्मेलन था, जिस में 5000-6000 लोग सम्मिलित हुए। उन लोगों को नाश्ता बत्रा साहब ने दिया तथा स्वयं पूरे परिवार के साथ जनसमूह के बीच खाना खाया, क्योंकि उन का कहना था कि मुझे भी इस बात का पता चले, कि जन समूह को कैसा खाना दिया जा रहा है।

इसी प्रकार एक बार भीम नगर गुड़गांव में आर्य सम्मेलन था भोजन के समय बतरा जी ने किसी के घर न जाकर लंगर में ही खाना खाया।

बत्रा जी का आर्य समाज के हर क्षेत्र में योगदान को तो भुलाया नहीं जा सकता, परन्तु उन का गुरूकुल की ओर एक विशेष आकर्षण था। गुरूकुल, एटा की सेवा करने में अपने आप को आनन्दित महसूस करते थे। वर्ष में एक बार वह गुरूकुल अवश्य जाते थे तथा वहां के

ब्रह्मचारियों को पिता का प्यार देते हुए उन की हर प्रकार से सहायता करते थे।

विदेश में आर्य समाज के प्रचार हेतु वह नेरौबी तथा मॉरीशस भी गए।

आर्य समाज के साथ-साथ जीवन के हर क्षेत्र में कभी किसी से पीछे नहीं रहे। जामा मस्जिद के क्षेत्र में एक छोटी सी बुक बाइंडिंग की कार्यशाला लगाकर पूरे उत्तर भारत में बुक बाइंडिंग का सिक्का जमा दिया। उत्तर भारत का कोई भी विश्वविद्यालय, पुस्कालय उन के कार्य से अछूता नहीं रहा। एक बार भारत सरकार ने ईरान की राजकुमारी को कुछ पुस्तकें भेंट करनी थी। बत्रा जी ने उन पुस्तकों पर सुन्दर ढंग से जिल्द चढ़ा कर स्वयं तो प्रशंसा हासिल की, तथा भारत सरकार का भी मान बढाया।

अपनी छोटी सी कार्यशाला में वह कभी भी किसी कर्मचारी पर गुस्सा नहीं हुए, वह तो सारे कर्मचारियों को अपने बच्चों के समान मानते थे, उन के हर सुख-दुःख में पूर्ण रूप से भाग लेते थे जैसे एक परिवार के सदस्य हों।

इसी प्रकार अपने कर्मचारियों के सुख-दुःख का भागी होते हुए अपने कार्य को दिन दुनी रात चौगुनी प्रगति करते हुए चार चाँद लगाए, तथा अपनी आय में से आर्यसमाज, गुरुकुल और गरीबों की आर्थिक सहायता में सदैव तत्पर रहे।

बत्रा जी का एक सपना था कि पूरे भारत में शिक्षा केवल गुरूकुल पद्धति के अनुसार दी जाए, जिस में अमीर-गरीब का प्रश्न न हो तथा प्रत्येक ब्रह्मचारी को शिक्षा प्राप्त करने का बराबर अधिकार तथा अवसर मिले।

GOOD CONDUCT

PREFACE

This is the age of development. New inventions are taking place every day. With this kind of natural progress the human being is getting more materialistic. The means of enjoyment are increasing. People are also getting averse to God and Truth. The aim of life has become to get pleasure and wilful happiness. The thinking ones are shedding tears on this situation. If this trend continues, then goodness will vanish from the human race. Then only the name will remain of the bliss. The wordly enjoyments show their colour for sometime, but bring tears later on. Real happiness becomes available with self control, in keeping healthy, strong and high one's body, mind and soul. This happiness is stable. The well wishers take away the people from this current, and show them the path of real happiness. The result of every good effort is good. Several people come on the proper path, which looks difficult in the beginning. But as one advances on this path, his happiness also increases.

The principles of good conduct have been gathered from the scriptures and written in this tract in simple language, and many things have been told in a few words.

If these are explained in detail, it will form a big book. If you read these and tell to others again and again, new ideas will strike automatically.

I hope that this book will prove useful for children, adults-men & women; and good people will circulate it.

"When wealth is lost, nothing is lost

When health is lost, something is lost

When character is lost, everything is lost."

Because one loses health, wealth, fame, conduct, beauty and reputation with bad character.

Good conduct gives long life. Good conduct gives the wanted offspring. Good conduct gives the non-diminishing wealth and helps in eradication of ill behaviour.

The word 'conduct' includes the way of living, meeting big and small, meeting in society, conduct of relatives, that is behaviour of all types. It includes pure conduct, to shed evils and to obtain virtue. The English word 'character' also means good conduct. This tract contains only the principles of good conduct as enunciated in Hindu scriptures. These are excellent and capable of elevating the human being. By acting upon these one gets true happiness.

I

To observe the traditions of the family, race, society and the country, is called good conduct or civilisation. Manu has written about this in detail:-

1. Respect the elders. Bow down with folded hands. Walk on their left. Serve the elders. Manu says that with the service of elders one gets long life, wisdom, fame and increase in strength. Respect to elders also helps in proper control in families.

2. When a person comes to meet you, welcome him with a smile. Offer him a seat and when he leaves, then say 'God bless you', your journey should be comfortable and auspicious God take care of you.

   At the time of meeting and separation, bow down to the parents, teacher etc. with folded hands taken to the forehead. Where there is more love, embrace one another.

3. Whenever you go to another home to meet somebody, then do not go in without intimation. Do not enter a room at once with opening of the door, without knocking or taking permission, even in one's own house. Be brief on essential conversation. Do not stay without reason. If the host wants, you can stay further. On your own part, take leave as early as possible.

4. Keep the elder on your right side while sitting or walking. Get seated on the right side, a woman elder or younger just as the mother, sister or daughter. To seat a person on the right is a mark of respect, but it is

the directive of scriputers to seat the wife on your left. It indicates that you are going with your better half, while sitting or walking; or with some other relative. To keep left near the heart is also a symbol of love.

5. When you take something from somebody or he assists you in some job, then say thanks to him. If some mistake is committed then ask for forgiveness or say 'I am sorry'. On the fault of another, having a regret from the core of his heart, smile and say 'that is alright'.
6. If two persons are talking, do not go between them. Do not interrupt them in a casual manner. Do not express your opinion unless asked for. Do not talk rot just to show your intelligence. Come to the point. Do not lay the foundation of a quarrel, by interfering in a conversation.
7. In a meeting, do not take seat in a place, where you may be asked to vacate it. Do not try to go forward by disturbing others. Listen to the proceedings calmly. Do not make a noise. Do not talk to each other. If necessary, say slowly in the ear. If cough or sneezing troubles, then put the handkerchief in front of your mouth, so that drops do not fall on someone else. There should be no sound due to a burp. Go, when you go somewhere, wearing good and clean clothes. If you go early, sit on one side; so that others do not get disturbed, while you come back. If you have to speak, do it within the subject and with arguments.
8. If you go in a meeting, to indulge in wasteful criticism and discussion, and spoiling the atmosphere is bad. It is evil to tell truth and untruth to get the support of others, for indicating your point of view.

9. Show affection towards brothers, sisters, parents and other relations in the family. Talk humbly to elders and obey their advice. But if some elder advises against the good conduct, then do not act upon that. Do not create a rift in the house, nor allow someone else to do so. There is a lot of disunity in our country and it has caused lot of damage. Leave aside communal rift, disunity takes place even in the institutions performing laudable work. Whosever makes an effort to remove disunity, he is the true well wisher of the country.

10. Sweet tongue is a magic, whether in home or outside.

II

11. Do not have a greedy look on another's wealth, wife or land. Treat the wife of another as your mother. Treat the money of another as a piece of earth. The pious people see a woman as per her age, as a daughter, sister or mother, and look downwards.
12. Do not join in a bad company. Do not spend much time with fools. One does not learn good things from them, but if one adopts a bad habit like drinking, gambling, smoking, stealth and prostitution; one destroys oneself.
13. A student should remain aloof from the bad company. Sometimes bad teachers also spoil the students like their own offspring, so avoid them. One picks up bad habits due to lack of experience, leading to weakening of the body and mind, and loss of happiness in life.

The glow, strength and intellect are dependent on semen. The tree grows as per its seed. Semen is the essence of our eatables. Eatables turn into juice, blood, flesh, fat, bone, marrow and then into the semen. The body becomes strong if it remains inside, and weakens with its outlet. It remains inside by taking exercise, pure thoughts and not taking intoxicating and stimulating articles. By reading novels and seeing cinema and sexual pictures, to talk rot in friends, not to take exercise, to keep unclean the urinary organ and touching it frequently, lead to the emission of the semen. This is harmful.

One should be free from masturbation also. One becomes weak with wet dreams, and there is also the memory loss.

Semen starts growing from the age of ten, and is produced in large quantity by the age of sixteen. All sort of thoughts arise at that time, and if these are suppressed and by taking excercise; the semen becomes ripe by the age of twenty five. With this the foundation of the body gets tough, and body like the horse becomes strong. The health and age improves. This is the time for getting married and have children. Earlier than this, the children are born weak.

In this connection Manu has advised the students to cast away wine, flesh, fragrance, the garland of flowers, tasty food, company of women, sour articles, to rub the limbs, touching urinary organ without reason, use of eye liner, lust, anger, greed, infatuation, worry, jealousy, enmity, to see dance & perform it, music, to insult one another, back biting, to see women, to speak incorrect words, and to damage others.

Always sleep alone. Should not allow the semen to fall. If one allows the semen to fall willingly, his abstinence is lost.

Similarly Swami Dayanand Saraswati writes in the third chapter of 'Light of Truth' that:-

"The obstructions in getting knowledge should be left out; for example the company of persons fond of sex, use of wine, sexual intercourse, child marriage, taking excessive food, excessive awakening, laziness and dishonesty in reading, writing and examination, not to understand the importance of abstinence for the strength of intellect, health etc., to meditate on others instead of worship of God etc."

An indication is enough for the wise. Those who understand it, will be happy on growing old; others will repent and will say that we should have followed the advice.

III

14. A person who takes care only of the body and not of the mind, is imperfect. There is a difference between the brain and the mind. Mind works through the brain, but is more delicate than the brain. The mind thinks, feels, desires, hates, remembers, argues, knows good and evil, and makes a person of good character. It can make a person of bad character, also by leading on an adverse path. The thinner part of the mind is called intellect, and it leads a person to a pious path. The unclean part of the mind is not far-seeing. It wants instant joy and happiness. To get up early in the morning is good for health. The mind will say why leave the pleasure of sleep at this hour. But the intellect says that bearing a little trouble now, will bestow greater happiness later on. He will get up. Similarly the intellect shows the way on every subject. These individuals turn into men of good character.

Those who obey the mind fall down in estimation. In Bhagwad Gita, Lord Krishna has termed the body like a Chariot, whose owner is soul and its horses are five organs of sense (eye, nose, ear, tongue and skin) along with five organs of deed (hand, foot, mouth, organs of urine & stools). The intellect by becoming the charioteer, is driving these horses with the rein of the mind. But if the intellect loosens the rein, the horses will ruin the chariot by running hither and thither. If the intellect tightens the rein of mind, the horses will reach the destination.

To go after the desire, is equivalent to loosening of the rein; and to control the desire, and fulfil good desire, but to reject a bad desire amounts to following the intellect.

In the same way, good conduct in the day to day dealings, and to give the same treatment to others as we anticipate for ourselves; is following the dictate of the intellect. To treat others in a rough manner just in the interest of our selfishness, is like obeying the mind. For those wishing to follow the path of goodness and piety, some suggestions are given below:-

15. Modesty is the ornament for both men and women, To like oneself is ego, to praise one's own intellect and deeds, to consider one's opinion as superior, flattery, hatred towards the poor, arrogance on subordinates, to expect admiration from others, of one's looks and dress, become a cause for mockery.

16. The heart of a jealous person is full of malice and ill will. He cannot tolerate the praise of others and grumbles in oneself. If you want to become great, then put forth the ideals of great men and follow them. Mind gets elevated by adopting the good deeds.

17. A talkative person is troublesome for the society. His ears tire with the rotten talk, but not he himself. He becomes lowly with his bragging, and considering himself as an expert in every field. A fool does not give rest to his tongue.

18. To instigate somebody, making a mockery of him, to laugh at a blind, lame or an ugly person, to taunt every body; lead to obstruction in one's own well being.

19. Firmness of the mind is the first element of Dharama. Bravery and self satisfaction strengthen the heart. Not to abandon one's principles at the time of trouble and difficulty is bravery. Whatever God gives as a result of our effort, to be satisfied on that and to remain happy in all situations is patience. Sorrow, ill luck and loss always chase a man. It is thus better from the very beginning, to strengthen one's heart with courage and patience. A brave person looks at the destiny with disgust. Don't be impatient and sorrowful by enhancing your desires. God will give you a reward as per your deeds, and does not fulfil so many of your desires in your own interest.

20. Forgiveness is the second element of Dharama. If someone commits a crime unknowingly, a subordinate commits a mistake, some fool insults you; not to be angry inspite of having the authority to do so; means forgiveness. With this the anger causing turmoil in the brain and boiling of the blood become calm. The body becomes light, health improves and one is happy.

21. The third element of Dharama is self control. One sage has said that it is not possible to get true happiness without the health, wisdom and the peace of mind; and these things do not become available to an amorous person, Pull the rein of the mind, when the sexuality spreads the articles of lust, bends one to the colourful objects of enjoyment, wine, flesh and shows a glimpse of sex. Do not be entangled in a dubious path. Exercise is the father of health and the self control is its mother.

The end of an amorous person is ill fame, illness, poverty, sorrow, regretfulness and downfall of the soul.

22. Manu has described 'Non stealth' as the fourth element of Dharama; that is not to snatch the right of another, nor to have bad intention about it. If one has something in mind and says something else, it is the theft in the mind. If one gives some message and it is delivered with an alteration, this amounts to theft in the tongue. A person of good conduct should give up the theft of every kind. A person telling the truth finds a respect everywhere and his good reputation also spreads.

23. Cleanliess is the fifth element of Dharama. Clothes (even not very costly), the house, eatables-to keep all these clean, is a symbol of playfulness. The purity of the mind is bigger than that of the body. Manu says that the body is washed clean with water, mind with the truth and the intellect with the knowledge.

24. Control of the organs of the body is the sixth element of Dharama. Swami Dayanand has explained its meaning, as not to be entangled in them. The function of the eye is to see, but to see with a passionate look is bad. So is the case with the ear, nose, tongue etc. Even if one organ of the body is struck up in pleasure, then the intellect of the individual becomes more and more impure, just as one hole in the pot leads to outflow of water.

25. The seventh element of Dharama is wisdom, that is every job should be done with deliberation and farsightedness, to avoid haste, to keep in mind the ephemeral nature of the universe and try to understand

it, as to why man came and where he has to go, what is his duty and what is his objective. With such a sort of intellect the man proceeds on the path of welfare of the society.

26. Knowledge is the eighth element of Dharama. Knowledge is the ornament of man. All men and women should try to become intellectual. The best knowledge is that which makes a man humble and which reveals the secrets of Dharama and the universe.

27. Truthfulness is the ninth element of Dharama. One sage has said that after learning the truth one has not to repent. Then you need not take an oath. Truth is one, and the doubts are your own creation. Truth is costlier than pearls, and yearn for it.

Do not leave the courage on getting tired on the way. When you reach Him, your effort will turn into happiness. Don't say that the truth causes hatred, but the opportunism of course gets you money. The enemies caused on account of truth are better than the friends becoming available through the flattery. Though the man aspires for truth, but he does not own it while facing it. There is no fault in the truth, the man does not accept it due to his own cowardice.

28. The tenth element of Dharama is Non-Anger. That is not to go in a rage unnecessarily on every occasion. By remaining in a constant state of grumble, one loses the peace of mind. Patience, intellect, knowledge and sense of duty are lost and many undesirable events have taken place in the world due to anger. Just as the storm and the earthquake cause large scale devastation,

similarly the angry person causes destruction around him. Do not keep the malice in your heart, it will put you in the trouble.

29. Do not be so overjoyed in your success that you become intoxicated with pride. Nor allow the sorrow to become so deep that it annihilates your heart and brain. Thank God in happiness, endure the trouble with bravery, and see in it the justice of the Almighty Judge.

30. He who does not feel pity for the blind, lame, hard of hearing, dependant, sick, hungry, thirsty, one in trouble; who never sheds tears of compassion, is not kind towards crying and shrieking animals, he himself does not deserve any sort of sympathy. One who on seeing an ugly, crippled, hunch backed or old and the creeping person, does not offer help and instead mocks at them, he is not fit to be called a human being.

31. Intellect is a gift of God. If you have got it, then give education to the illiterate, but do not see them with contempt. Tolerate the unreasonableness of the fool. One does not boast so much with true knowledge as with foolishness. Think over everything with the touchstone of the intellect. Always be ready to accept the truth and discard the falsehood. The fool is always obstinate and he claims the expertise on every subject, except on his own foolishness. Ego is worth contempt. One should continue to improve his intellect with the help of the wise. Mere useless talk is foolishness.

32. If you are wealthy, thank God for it, and spend your money in pious deeds. Make an effort to meet the necessities of the poor, without an element of display.

In satisfaction of ego, do not waste money on the advice of bad friends. If you are poor, be satisfied with what God has bestowed on you.

You will remain hale and hearty with the earnings through labour. You will not fall sick, by consuming not easily digestible food of the rich. The happiness which a poor gets with the patience, does not become available to the rich on their cushions and soft beds.

33. If God had made you the master, be just to your workers. Keep propriety in mind while issuing directions. You can not get their love with pressure and strictness. If you are a subordinate, bear the admonition of the master with calmness. Be efficient in your job. The master gets happiness from trustworthiness and the truth.

34. To forget the assistance from anyone, or attempt to hide it or to create ill will when in a position to help, is bad manners. The grateful person is happy by paying something in return, But if he is unable to pay back, he remembers it with love in his heart. If God has put you in a position to help another, then do not put it on shame by bragging, on the receiver of the benefit.

    Do a good deed and forget it.

35. The scriptures have termed the lust, anger, greed and pride as five enemies. They bring him down from good conduct and instigate the person who is outside the border line.

36. Worry is the worst sort of trouble, worry is like the funeral pier. To worry is natural for us, as happiness comes only once in a while, and it evaporates quickly.

The effect of worry remains for a long time. Trouble and difficulty come on their own, and cost us our happiness. Even when the happiness is great, it is not visible. But even a small sorrow irritates us, so don't increase the sorrow with more sorrow. Do not drown in the sorrow. The thought of trouble is worse than the trouble itself. Make the best of the time by not recalling the suffering borne in the past. Then you will become a useful part of the society. He who weeps before the event, weeps more.

37. A miserly person does not fulfil his obligations towards his children, wife, mother, father and the relatives. Money is very dear to him. But to waste money is worse than the miserliness, as this also crushes the natural rights of all relationships and the poor people. It is difficult to have a good living after earning money. The person who spends money wisely, he removes his obstacles and puts forth a good ideal in the society.

38. A smiling face removes the sadness of all the friends. Sadness erupts from the weakness of the soul. A smiling person casts amusement on the face of another also. But remember that laughter of a low grade, spoils the character.

39. The inner voice of a person decides the goodness, badness, lawfulness and unlawfulness, if he listens to it with a true heart. Swami Dayanand has written in the 'Light of Truth', that while undertaking an unlawful activity, the fear, doubt and shame erupt from the heart; but the delight and mental satisfaction arise while performing a pious job. Whatever you feel correct for

self, think so far others also. This also appears to be correct through the inner voice.

No one wants that somebody else should abuse him, no one should steal his articles. No one should cast evil eye on his daughter and daughter in law. No one should be jealous of his progress, no one should put an obstacle in his work. No one should tell a lie to him. Then he should not also do similar things with others. One who does not like something for himself, should not wish for others also.

40. If everybody performs his duty, then the world can become a heaven. People want rights but do not want to perform their duties, In whatever situation you are, authority or subordinate, brother or sister, wife or husband, son or father, shopkeeper or the clerk, judge or a magistrate, leader or debtor, small or big; if you perform your duty well, both this world and the next will improve upon, for you.

41. The deeds which are harmful for health, are due to bad character. Always take care of your health, and for this there are four fundamental principles:-

    (1) Abstinence. Not to marry in younger age and not to indulge in bad habits.

    (2) Exercise, deep breathing (in clean air), walk in open air.

    (3) Pure food, to take simple food chewing thoroughly and keeping some appetite, to escape from intoxicating articles. To improve the mental power and will power.

(4) Mind affects the health of the body. Leave the thought of sickness, concentrate on health, and control yourself with the power of the mind.

42. Pride is bad but so is the lowering oneself before every body by considering oneself as inferior. A man should have his own self respect, and then the people will also pay respect to him. Have self confidence and courage.

43. Make a promise after deliberate thinking. But when you do it, fulfil it. Observe the timings. If you have given an appointment, stand by it. Learn the value of the time. Spend the time of holiday in your progress. Don't waste time, it is so valuable.

44. Good conduct makes one popular. Good conduct is necessary in getting up, sitting, walking, meeting the people, in a talk, eating and drinking, going in Associations and societies, participating in banquets, passing on urine and stool, taking a bath; and in fact in every sphere of life. These jobs can be performed in a good manner and as per the principles of society, and conversely by useless talk and negative approach.

Good conduct expresses the status and the strength of character.

Habits once taking root, do not go away easily. As such do not pick up the bad habits. Habits develop unknowingly and a vigilant eye should be kept on them.

45. A man of bad character gets a disrepute in the world. He always falls into trouble. He remains sick and is of smaller longevity of life; but a person of good character even not having the benefit of education; remains happy and lives for a hundred years (Manu).

46. A brahmin devoid of character does not get the fruit of recitation of Vedas, but a person of good conduct gets full fruit of Dharama. A brahmin is entitled to accept charity, if he has got both education and good conduct. (Manu)

47. It is difficult for all to become intellectual, but every one can become a man of good conduct (Swami Dayanand).

48. A person who does not drink wine, and does not desire for another woman even mentally, he goes to the heaven (A poet).

49. There can be no tree, where there is a fire. There can be no prosperity where gambling is played (A poet).

50. Austerity, fast, fame, knowledge, good family line, purity of mind and age–A prostitute cuts them as an axe cuts a tree. Reputation also falls to the ground, along with all these attributes due to prostitution. The dispute increases, and a situation can arise leading to murder. (A poet).

51. A person who snatches the wife of another, or attempts to steal the wealth of somebody else through physical violence; or he who does not listen attentively to the advice of elders and the teacher, and keeps them aggrieved; he does not get happiness neither in this world nor in the next one.

(OM SHAM)

सत्यार्थ प्रकाश महापुरुषों की दृष्टि में

"जितने बार सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ा उतनी बार ही जीवन-जगत् के अनबूझ प्रश्नों एवं रहस्यों के लिए नई दृष्टि, चिन्तन, तर्क-प्रमाण, विज्ञान-सम्मत समाधान के मोती मिले हैं। यदि सत्यार्थ प्रकाश की एक प्रति का मूल्य एक हजार रुपये होता तो उसे सारी सम्पत्ति बेचकर खरीदता, यह अद्वितीय पुस्तक हर मूल्य में सस्ती है।" *-पं० गुरुदत्त विद्यार्थी*

"महर्षि के सत्यार्थ प्रकाश से मुझे स्वाधीनता के चिन्तन में बल व प्रेरणा मिलती है।" *-वीर सावरकर*

"मैंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा। इससे मेरे जीवन का तख्ता ही पलट गया।" *-रामप्रसाद बिस्मिल*

"मुझे स्वामी श्रद्धानन्द बनाने में सत्यार्थ प्रकाश का अमूल्य योगदान रहा है।" *-बैरिस्टर मुंशीराम*

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में स्पष्ट लिखा है कि मेरे इस ग्रन्थ बनाने का प्रयोजन सत्य अर्थ का प्रकाश करना है। अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है, उसको मिथ्या ही प्रतिपादित करना।

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है। प्रत्येक प्राणी के शुभ-अशुभ कर्मों का फल देने वाला है। वह आकाश के समान सर्वव्यापक है। सृष्टि की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय करता है। परमात्मा की कोई प्रतिमा (मूर्ति) नहीं है। ईश्वर संसार के समस्त पदार्थों का आधार है। अनन्त ज्ञान और बल से परिपूर्ण है। ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव पवित्र हैं।

सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ें

1. ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जानने के लिए।
2. सन्तानों को सुशिक्षित करने के लिए।
3. अन्धविश्वास और पाखण्डों को चुनौती देने के लिए।
4. वैदिक धर्म की पुनःस्थापना के लिए।
5. गुण-कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था की स्थापना के लिए।
6. गृहस्थाश्रम के नियमों को समझने के लिए।
7. आश्रम व्यवस्था को समझने के लिए।
8. राजधर्म को जानने के लिए।
9. ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करने की उचित विधि को जानने के लिए।
10. ईश्वर, जीव और प्रकृति के भेद को समझने के लिए।
11. जगत की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय को समझने के लिए।
12. बन्धन और मोक्ष विषय को जानने के लिए।
13. धर्म के सत्य स्वरूप को जानने के लिए।
14. विश्व में फैले मत-मतान्तरों में सत्य-असत्य का निर्णय करने के लिए।
15. भारतीय संस्कृति को समझने के लिए।
16. युवकों में बढ़ती हुई नास्तिकता को रोकने के लिए।
17. धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक क्रान्ति के लिए।
18. विश्व में एक ही मानव धर्म को विस्तृत करने के लिए।
19. वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश अवश्य पढ़ें।